अखिल भारतीय कान्यकुब्ज सभा लखनऊ

का

नव सम्वत स्वागत एवॅ होली मिलन समारोह 2014

कार्यकम के अनुसार दिनांक **23** मार्च **2014** को राय उमा नाथ वली प्रेक्षा गृह कैसर बाग लखनऊ में 5:30 सायं गुलाल तिलक व परस्पर सदस्यों के होली मिलने से आरम्भ हुआ व ठीक **6** बजे नव संवत्सर आगमन एवॅ होली मिलन समारोह का मंच कार्यकम प्रारम्भ हो गया। सभागार में मुख्य अतिथि श्री उमा शंकर बाजपेयी सभा के अध्यक्ष न्याय मूर्ति डी के त्रिवेदी के अलावा सर्वश्री आर सी त्रिपाठी श्री एस एन शुक्लाआर सी दीक्षित इंजीनियर एस एन मिश्रा सत्या नन्द दीक्षित वैज्ञानिक काली शंकर शुक्ल सारस्वत समाज के प्रतिनिधि व सचिव मनमोहन शर्मा मुख्य सम्पादक मुग्दल तथा राय बरेली उन्नाव व सीतापुर से आये प्रतिनिधि गण और ओम ब्रह्मण सभा के संस्थापक सचिव धनंजय दुबे की उपथिति विशेष उल्लेखनीय थी।

कान्यकुब्ज वाणी के सम्पादक डा डी एस शुक्ल ने सभा का स्वागत करते हुए बताया कि होली का पर्व भारत की रंगारंग संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है।पंजाब में इसे शौर्य पर्व के रूप में मनाया जाता है।**23** मार्च भगत सिंह जी की वजह से "शहीद दिवस" भी होने दीप प्रज्ज्वलन के फौरन बाद ही भगत सिंह जी के चित्र पर माल्यापर्ण किया गया।

मुख्य अतिथि व मंचासी न महानु भावों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के बाद कार्यकम की शुरूवात मुख्य अतिथि के परिचय से हुई.

दीप प्रज्ज्वलन

शहीद भगत सिंह के चित्र पीआर माल्यार्पण

परिचय एवॅ अभिनन्दन

28 नवम्बर **1937** को बाराबंकी के एक छोटे से गॉव मुंडेरी के एक वैष्णव परिवार में एक बालक ने जन्म लिया। उस वख्त किसी ने यह नहीं सोचा कि यह शिशु आगे चल कर पुलिस ऐसे विभाग में ईमानदारी, कर्त्तव्य निष्ठा के मान दंड स्थापित करेगा और आज कान्यकुब्ज सभा में हमारा आमंत्रण स्वीकार कर हम सब को सम्मानित करेगा। मुझे श्री बाजपेयी जी को शिशु कहने के दुःसाहस के लिये क्षमा कीजियेगा। इस समय उन्हें शिशु कहते समय मेरे ह्रदह में वही भक्ति भाव है जो कि बाल चरित लिखते समय सूरदास जी का था।

श्री बाजपेयी जी की प्रारम्भिक शिक्षा बाराबंकी में हुई। लखनऊ विश्व विद्यालय से इन्होंने बी ए और एम ए किया और वह भी मेरिट में प्रथम स्थान के साथ। जब यह Abstract Algebra में पी एच डी कर रहे थे तभी इन्हें उसी विश्व विद्यालय में मैथमेटिक्स का लेक्चरर नियुक्त किया गया। अध्ययन और अध्यापन के दौरान ही **1963** में इन्होंने ऊत्तर प्रदेश पुलिस सर्विस में चयनित होने के बाद प्रदेश के तमाम महत्वपूर्ण पदों पर काम किया। एस एस पी इलाहाबाद , डी आई जी कानपुर व फैज़ाबाद रेन्ज के रूप में इन्होंने बहुत ख्याति पाई। आई जी रैंक में पदोन्नति होने पर इन्होने आई जी कम प्रिंसिपल पुलिस टीचिंग एकाडमी मुरादाबाद के पद को सुशोभित किया तथा **1995** में सेवा निवृत्त हुए।

मुख्य अतिथि का स्वागत करते कोषाध्यक्ष ए के त्रिपाठी

अपने सेवा काल में इन्होंने कर्त्तव्य परायणता, ईमानदारी, साहस और वीरता के कीर्ति मान स्थापित किये जिसके लिये इन्हें **1981** में राष्ट्रपति का भारतीय पुलिस का वीरता पदक, राष्ट्रपति का भारतीय पुलिस का long and meritorious सेवा पदक दिया गया तथा **1983** में एक बार फिर राष्ट्रपति द्वारा भारतीय पुलिस के शौर्य पदक से सम्मानित किया गये। बाजपेयी जी रिटायर्ड तो हैं पर टायर्ड नहीं हैं। इन्होंने अपनी दूसरी इनिंग दर्शन और आध्यात्मिकता से शुरू की है और संपृत यह "श्री राम चन्द्र मिशन" जो कि एक ध्यान, साधना व आध्यात्म का वैश्विक संस्थान है, के "वैश्विक अवैतनिक" सचिव हैं तथा इच्छुक व्यक्तियें को बगैर किसी वर्ण, जाति, अथवा धर्म भेद के लोगों को सहज योग के माध्यम से ध्यान करना भी सिखाते हैं। ऐसी बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री बाजपेयी जी को मैं नमन करता हूॅ और "जीवेत शरदं शतम् सोऽपि सर्व व्याधि विविर्जितः" की कामना करता हूॅ।

जुड़ने और जोड़ने के मकसद से शुरू की गई पत्रिका "कान्यकुब्ज वाणी" के प्रिन्ट और एलेक्ट्रानिक संस्करण के विमोचन हेतु पत्रिका सह सम्पादक डा अनुराग दीक्षित ने मुख्य अतिथि को प्रस्तुत की। मुख्य अतिथि ने एलेक्ट्रानिक संस्करण को वेब साइट इन्चार्ज इंजिनियर अजय त्रिवेदी को पत्रिका इंटरनेट पर वेब साइट <kanyakubj.org> पर अपलोड करने को दे दी।

कान्यकुब्ज वाणी का विमोचन

वाणी के इलेक्ट्रोनिक संस्करण को वेब-डिजाइनर अजय त्रिवेदी को प्रदान

खचाखच भरा हाल

इस वर्ष सभा में पहली बार एक वैज्ञानिक और एक उद्योगपति को "कान्यकुब्ज रत्न" के सम्मान से सम्मानित किया गया।

"कान्यकुब्ज रत्न श्री विमल शुक्ल"

विमल शुक्ल को उनके आवास पर सम्मान

एक बार मैने श्री शुक्ल जी से प्रश्न किया कि यदि आप चाहते तो किसी भी सरकारी सेवा में जा सकते थे, डाक्टर या इन्जीनियर भी बन सकते थे। फिर आपने उद्योग को ही क्यों चुना ? शुक्ल जी का ऊत्तर था कि इन पेशों से केवल मैं ही व्यवसाय पाता और केवल अपना और अपने परिवार के लिये ही जीवित रहता। उद्योग से न केवल मेरे परिवार का भरण पोषण हुआ बल्कि बहुत से अन्य परिवारों को भी रोटी रोज़ी मुहय्या हो गई।

उद्योग के चयन में इन्होंने माडर्न मैन्युफैक्चरिंग जिसमे मानव श्रम की उपेक्षा होती है के स्थान पर इन्होंने ग्रामीणों को गॉव में ही गॉव के ही स्थानीय उत्पादों के द्वारा बनाये जाने वाले उद्योग स्थापित किये। महिला सशक्तीकरण के लिये महिलाओं को रोज़गार उपलब्ध कराने के लिये स्थानीय फल फूल व दुग्ध आदि के द्वारा बने खाद्य पदार्थ व फूड प्रज़रवेशन तथा आयुर्वेद के बढ़ावे के लिये जड़ी बूटियों से औषधियों व सौंदर्य प्रसाधन का निर्माण के लिये उद्योग स्थापित किये जो कि केवल लखनऊ व उत्तर प्रदेश के अलावा अन्य प्रान्तों में भी चल रहे है।

आज कल श्री शुक्ल जी की संस्था के अन्तर्गत **Meghdoot Gramodyog Sewa Sansthan, Lucknow, Sanskritayan Gramodyog Sewa Sansthan, Lucknow, Meghdoot Gramodyog Sewa Sansthan, Bhopal, आदि उद्योग चल रहे हैं। इसके अलावा श्री शुक्ल जी u p food preservation association,फलोत्पाद एवॅ दुग्ध प्रसंस्करण विकास एसोसिएशन तथा प्रदेशीय ग्रामोद्योग मंडल आदि के जनरल सेकटरी भी हैं।**

श्री शुक्ल जी अस्वस्थता की वजह से कार्यक्रम मे नहीं आ सके अतः सम्मान उन्हे आवास पर दिया गया

"कान्यकुब्ज रत्न **2** श्री काली शंकर शुक्ल"

वैज्ञानिक काली शंकर को सम्मान

आपने हाई स्कूल व इंटरमीडियट में मेरिट में थे और इलाहाबाद इन्जीनियरिंग कालेज से एल्क्ट्रिकल से बी ई किया और **1970** में रूड़की विश्वविद्यालय से advanced elrctronics and communication system से M E करने के बाद भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन जिसे इसरो भी कहते हैं में वरिष्ठ वैज्ञानिक रहे।

इसरो में कार्य करते हुए आपने भारत में सम्पन्न विभिन्न उपग्रह संचार परियोजनाओं – साईट, स्टेप, एप्पल, स्टेशनर, इन्सैट में आपका महत्वपूर्ण एवं विशिष्ट योगदान रहा है तथा उपग्रह संचार प्रणाली के अनेक तंत्रों और उपतंत्रों के डिजाइन और विकास में आपने अनेक कार्य किये हैं।1973 में इसरो द्वारा विकसित साईट भू–केन्द्र उपकरणों के परीक्षण के लिए विश्व प्रसिद्ध अमरीकी अन्तरिक्ष संस्था नासा गये तथा 1984 में ब्रिटेन की आक्सफोर्ड स्थित प्रयोगशाला में आमन्त्रित किये गये

आपने संचार के क्षेत्र मे देश में पहली बार स्वदेशी तकनीकी का प्रयोग करके देश के अन्दर सस्ते दाम में उपग्रह संचार प्रणाली में प्रयुक्त किये जाने वाले उपकरण 'स्पेक्ट्रम अनालाइजर' का विकास किया तथा संचार में उपयोग के लिए विशेष प्रकार के हेलिकल फिल्टर विकसित किये।

आपके 1000 से भी अधिक लेख विभिन्न राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं तथा कई लेखों को सर्टीफिकेट ऑफ मेरिट सम्मान भी प्रदान किया जा चुका है। इनके द्वारा लिखी पुस्तकों और विज्ञान से सम्बंधित लेखों पर मिले एवार्डस की लिस्ट बहुत लम्बी है जिसे इस अल्प समय में गिनाना मुश्किल है।इसलिये यह बताना काफी है कि प्रति वर्ष इन्हें किसी न किसी संस्था से आज भी सम्मानित किया जाता है।

काली शंकर जी विज्ञान के क्षेत्र के अलावा आध्यात्म में भी रूचि रखते हैं।इस विषय में भी इनकी गद्य और पद्य में अनन्य रचनायें हैं जिसमे "गीता" का सरल हिन्दी में छन्दबद्ध की रचना उल्लेखनीय है।इनका यह गीता पत आधारित काव्य एक पत्रिका में धारावाहिक रूप से प्रकाशित हो रहा है।

सभा के इतिहास में पहली बार किसी उद्योगपति और एक अन्तरिक्ष वैज्ञानिक को सम्मानित किया गया।इस निर्णय के पीछे धारणा थी कि यदि वैज्ञानिक काली शंकर द्वारा विकसित अन्तरिक्ष उपग्रह के "ट्रान्सपान्डर्स " यदि विमल शुक्ल जी के ग्राम्य उद्योग में कुटीर उद्योग में बनन लगें तो गॉवों में उच्च तक्नीक का विकास व "प्रडक्शन कास्ट" में कमी होने से भारत को अभूतपूर्व लाभ हो सकता है।

खंड-काव्य "शिल्पी" का लोकार्पण

सभा की लोकप्रियता अब लखनऊ की सीमा को लॉघ चुकी है।इसलिये इस वर्ष हमने सीतापुर उन्नाव व रायबरेली निवासी छात्राओं को छात्रवृत्ति व साइकिलें उपलब्ध कराई।राय बरेली के प्रसिद्ध कवि श्री प्रमोद शंकर शुक्ल द्वारा रचित "खंड काव्य शिल्पी" का लोकार्पण मुख्य अतिथि द्वारा किया गया व

राय बरेली का बहु चर्चित “चातुर साहित्य पुरूस्कार” श्री कमला शंकर त्रिपाठी को दिया गया। इस पुरूस्कार में “अंग वस्त्रम” प्रशस्ति पत्र के अलावा रू **2100** की धन राशि सम्मिलित है।

रिपोर्ट प्रस्तुत करते महासचिव उपेंद्र मिश्र

सभा के महासचिव श्री उपेन्द्र मिश्र के द्वारा वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करने को बाद **1000**रू का पारितोषिक **16** मेधावी छात्राओं को दिया गया तथा दो छात्राओं को पुरे सत्र की फीस की प्रतिपूर्ति राशि प्रदान की गई तथा स्कूल व कालेज आने जाने के लिये **9** छात्राओं को साइकिल प्रदान की गई।

छात्राएं साइकिल के साथ

पुरुस्कृत छात्राएं

मुख्य अतिथि को स्मृति चिह्न एवं अंग-वस्त्रम

मुख्य अतिथि ने अपने व्यक्तव्य में प्रसन्नता जताई कि सभा कान्यकुब्जों के अलावा सभी ब्रह्मणों को जोड़ कर चल रही है।इन्होंने ब्रह्मणों को अध्ययन शील व मननशील होकर समाज को दिशा निर्देश के देने का आह्वान किया और एकजुट रहने का संदेश दिया।

अध्यक्ष जी के आशीर्वचन

अध्यक्ष श्री डी के त्रिवेदी ने मुख्य अतिथि को “स्मृति चिह्न” व अंग वस्त्रम द्वारा सम्मानित किया। अध्यक्ष जी के धन्यवाद प्रस्ताव के बाद राष्ट्र गान से सभागार को गुंजायमान करते हुए कार्यक्रम की समाप्ति हुई।

रवि सारस्वत का मोहक नृत्य

कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण सरास्वत समाज के श्री रवि सारस्वत रहे जिन्होंने “अजीब दास्तॉ है ये” गाने पर लय व भंगिमाओं का अद्‌भुत संगम प्रस्तुत किया। इनके द्वारा प्रस्तुत हास्य व मिमिकरी को भी लोगों ने बहुत सराहा।

अध्यक्ष श्री डी के त्रिवेदी ने मुख्य अतिथि को “स्मृति चिह्न” व अंग वस्त्रम द्वारा सम्मानित किया। अध्यक्ष जी के धन्यवाद प्रस्ताव के बाद राष्ट्र गान से सभागार को गुंजायमान करते हुए कार्यक्रम की समाप्ति हुई।

सफल आयोजन के बाद की प्रसन्नता